

भगवान् श्रीजानकीनाथकी

आरती

ॐ जय जानकिनाथा, हो प्रभु जय श्री रघुनाथा ।
दोऊ कर जोड़े विनवौं, प्रभु मेरी सुनो बाता ॥ ॐ ॥
तुम रघुनाथ हमारे, प्राण पिता माता ।
तुम हो सजन सँगाती, भक्ति मुक्ति दाता ॥ ॐ ॥
चौरासी प्रभु फन्द छुड़ावो, मेटो यम त्रासा ।
निश दिन प्रभु मोहि राखो, अपने संग साथ ॥ ॐ ॥
सीताराम लक्ष्मण भरत शत्रुहन, संग चारौं भैया ।
जगमग ज्योति विराजत, शोभा अति लहिया ॥ ॐ ॥
हनुमत नाद बजावत, नेवर तुमकाता ।
कंचन थाल आरती, करत कौशल्या माता ॥ ॐ ॥
किरिट मुकुट कर धनुष विराजत, शोभा अति भारी ।
मनीराम दर्शन कर,
तुलसिदास दर्शन कर, पल-पल बलिहारी ॥ ॐ ॥
जय जानकिनाथा, हो प्रभु जय श्री रघुनाथा ।
हो प्रभु जय सीता माता, हो प्रभु जय लक्ष्मण भ्राता ॥ ॐ ॥
हो प्रभु जय चारौं भ्राता, हो प्रभु जय हनुमत दासा,
दोऊ कर जोड़े विनवौं, प्रभु मेरी सुनो बाता ॥ ॐ ॥

प्रनवउँ पवनकुमार खल बन पावक ग्यानघन ।
जासु हृदय आगार बसहिं राम सर चाप धर ॥

किष्किन्धाकाण्ड

[दोहा २९]

बलि बाँधत प्रभु बाढ़ेउ सो तनु बरनि न जाइ ।
उभय घरी महँ दीन्हीं सात प्रदच्छिन धाइ ॥
अंगद कहइ जाउँ मैं पारा ।
जियँ संसय कछु फिरती बारा ॥
जामवंत कह तुम्ह सब लायक ।
पठइअ किमि सबही कर नायक ॥
कहइ रीछपति सुनु हनुमाना ।
का चुप साधि रहेहु बलवाना ॥
पवन तनय बल पवन समाना ।
बुधि बिबेक बिग्यान निधाना ॥
कवन सो काज कठिन जग माहीं ।
जो नहिं होइ तात तुम्ह पाहीं ॥
राम काज लागि तव अवतारा ।
सुनतहिं भयउ पर्वताकारा ॥
कनक बरन तन तेज बिराजा ।
मानहुँ अपर गिरिन्ह कर राजा ॥
सिंहनाद करि बारहिं बारा ।
लीलहिं नाघउँ जलनिधि खारा ॥

सहित सहाय रावनहि मारी ।
 आनउँ इहाँ त्रिकूट उपारी ॥
 जामवंत मैं पूँछउँ तोही ।
 उचित सिखावनु दीजहु मोही ॥
 एतना करहु तात तुम्ह जाई ।
 सीतहि देखि कहहु सुधि आई ॥
 तब निज भुज बल राजिवनैना ।
 कौतुक लागि संग कपि सेना ॥

छं०—कपि सेन संग सँघारि निसिचर
 रामु सीतहि आनिहैं ।
 त्रैलोक पावन सुजसु सुर मुनि
 नारदादि बखानिहैं ॥
 जो सुनत गावत कहत समुझत
 परम पद नर पावई ।
 रघुबीर पद पाथोज मधुकर
 दास तुलसी गावई ॥
 [दोहा ३० (क)]

भव भेषज रघुनाथ जसु सुनहिं जे नर अरु नारि ।
 तिन्ह कर सकल मनोरथ सिद्ध करहिं त्रिसिरारि ॥
 [सोरठा ३० (ख)]

नीलोत्पल तन स्याम काम कोटि सोभा अधिक ।
 सुनिअ तासु गुन ग्राम जासु नाम अघ खग बधिक ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

श्रीजानकीवल्लभो विजयते

श्रीरामचरितमानस

पञ्चम सोपान

सुन्दरकाण्ड

श्लोक

शान्तं शाश्वतमप्रमेयमनघं निर्वाणशान्तिप्रदं
ब्रह्माशम्भुफणीन्द्रसेव्यमनिशं वेदान्तवेद्यं विभुम् ।
रामाख्यं जगदीश्वरं सुरगुरुं मायामनुष्यं हरिं
वन्देऽहं करुणाकरं रघुवरं भूपालचूडामणिम् ॥ १ ॥

नान्या स्पृहा रघुपते हृदयेऽस्मदीये
सत्यं वदामि च भवानखिलान्तरात्मा ।
भक्तिं प्रयच्छ रघुपुङ्गव निर्भरां मे
कामादिदोषरहितं कुरु मानसं च ॥ २ ॥

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं
रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि ॥ ३ ॥

जामवंत के बचन सुहाए ।
 सुनि हनुमंत हृदय अति भाए ॥
 तब लगि मोहि परिखेहु तुम्ह भाई ।
 सहि दुख कंद मूल फल खाई ॥
 जब लगि आवौं सीतहि देखी ।
 होइहि काजु मोहि हरष बिसेषी ॥
 यह कहि नाइ सबन्हि कहूँ माथा ।
 चलेउ हरषि हियँ धरि रघुनाथा ॥
 सिंधु तीर एक भूधर सुंदर ।
 कौतुक कूदि चढ़ेउ ता ऊपर ॥
 बार बार रघुबीर सँभारी ।
 तरकेउ पवनतनय बल भारी ॥
 जेहिं गिरि चरन देइ हनुमंता ।
 चलेउ सो गा पाताल तुरंता ॥
 जिमि अमोघ रघुपति कर बाना ।
 एही भाँति चलेउ हनुमाना ॥
 जलनिधि रघुपति दूत बिचारी ।
 तैं मैनाक होहि श्रमहारी ॥

[दोहा १]

हनूमान तेहि परसा कर पुनि कीन्ह प्रनाम ।
 राम काजु कीन्हें बिनु मोहि कहाँ बिश्राम ॥
 जात पवनसुत देवन्ह देखा ।
 जानैं कहूँ बल बुद्धि बिसेषा ॥

सुरसा नाम अहिन्ह कै माता ।
 पठइन्हि आइ कही तेहिं बाता ॥
 आजु सुरन्ह मोहि दीन्ह अहारा ।
 सुनत बचन कह पवनकुमारा ॥
 राम काजु करि फिरि मैं आवौं ।
 सीता कइ सुधि प्रभुहि सुनावौं ॥
 तब तव बदन पैठिहउँ आई ।
 सत्य कहउँ मोहि जान दे माई ॥
 कवनेहुँ जतन देइ नहिं जाना ।
 ग्रससि न मोहि कहेउ हनुमाना ॥
 जोजन भरि तेहिं बदनु पसारा ।
 कपि तनु कीन्ह दुगुन बिस्तारा ॥
 सोरह जोजन मुख तेहिं ठयऊ ।
 तुरत पवनसुत बत्तिस भयऊ ॥
 जस जस सुरसा बदनु बढ़ावा ।
 तासु दून कपि रूप देखावा ॥
 सत जोजन तेहिं आनन कीन्हा ।
 अति लघु रूप पवनसुत लीन्हा ॥
 बदन पड़िठि पुनि बाहेर आवा ।
 मागा बिदा ताहि सिरु नावा ॥
 मोहि सुरन्ह जेहि लागि पठावा ।
 बुधि बल मरमु तोर मैं पावा ॥

[दोहा २]

राम काजु सबु करिहहु तुम्ह बल बुद्धि निधान ।
 आसिष देइ गई सो हरषि चलेउ हनुमान ॥
 निसिचरि एक सिंधु महुँ रहई ।
 करि माया नभु के खग गहई ॥
 जीव जंतु जे गगन उड़ाहीं ।
 जल बिलोकि तिन्ह कै परिछाहीं ॥
 गहइ छाहँ सक सो न उड़ाई ।
 एहि बिधि सदा गगनचर खाई ॥
 सोइ छल हनूमान कहँ कीन्हा ।
 तासु कपटु कपि तुरतहिं चीन्हा ॥
 ताहि मारि मारुतसुत बीरा ।
 बारिधि पार गयउ मतिधीरा ॥
 तहाँ जाइ देखी बन सोभा ।
 गुंजत चंचरीक मधु लोभा ॥
 नाना तरु फल फूल सुहाए ।
 खग मृग बृंद देखि मन भाए ॥
 सैल बिसाल देखि एक आगें ।
 ता पर धाइ चढ़ेउ भय त्यागें ॥
 उमा न कछु कपि कै अधिकाई ।
 प्रभु प्रताप जो कालहि खाई ॥
 गिरि पर चढ़ि लंका तेहिं देखी ।
 कहि न जाइ अति दुर्ग बिसेषी ॥

अति उत्तंग जलनिधि चहु पासा ।
कनक कोट कर परम प्रकासा ॥

छं०—कनक कोट बिचित्र मनि कृत

सुंदरायतना घना ।

चउहट्ट हट्ट सुबट्ट बीथीं

चारु पुर बहु बिधि बना ॥

गज बाजि खच्चर निकर पदचर

रथ बरूथन्हि को गनै ।

बहुरूप निसिचर जूथ अतिबल

सेन बरनत नहिं बनै ॥ १ ॥

बन बाग उपबन बाटिका

सर कूप बापीं सोहहीं ।

नर नाग सुर गंधर्व कन्या

रूप मुनि मन मोहहीं ॥

कहुँ माल देह बिसाल सैल

समान अतिबल गर्जहीं ।

नाना अखरेन्ह भिरहिं बहुबिधि

एक एकन्ह तर्जहीं ॥ २ ॥

करि जतन भट कोटिन्ह बिकट तन

नगर चहुँ दिसि रच्छहीं ।

कहुँ महिष मानुष धेनु खर अज

खल निसाचर भच्छहीं ॥

एहि लागि तुलसीदास इन्ह की

कथा कछु एक है कही ।

रघुबीर सर तीरथ सरीरन्हि

त्यागि गति पैहहिं सही ॥ ३ ॥

[दोहा ३]

पुर रखवारे देखि बहु कपि मन कीन्ह बिचार ।
 अति लघु रूप धरौं निसि नगर करौं पइसार ॥
 मसक समान रूप कपि धरी ।
 लंकहि चलेउ सुमिरि नरहरी ॥
 नाम लंकिनी एक निसिचरी ।
 सो कह चलेसि मोहि निंदरी ॥
 जानेहि नहीं मरमु सठ मोरा ।
 मोर अहार जहाँ लगि चोरा ॥
 मुठिका एक महा कपि हनी ।
 रुधिर बमत धरनीं ढनमनी ॥
 पुनि संभारि उठी सो लंका ।
 जोरि पानि कर बिनय ससंका ॥
 जब रावनहि ब्रह्म बर दीन्हा ।
 चलत बिरंचि कहा मोहि चीन्हा ॥
 बिकल होसि तैं कपि कें मारे ।
 तब जानेसु निसिचर संघारे ॥
 तात मोर अति पुन्य बहूता ।
 देखेउँ नयन राम कर दूता ॥

[दोहा ४]

तात स्वर्ग अपवर्ग सुख धरिअ तुला एक अंग ।
 तूल न ताहि सकल मिलि जो सुख लव सतसंग ॥

प्रबिसि नगर कीजे सब काजा ।
 हृदयँ राखि कोसलपुर राजा ॥
 गरल सुधा रिपु करहिं मिताई ।
 गोपद सिंधु अनल सितलाई ॥
 गरुड़ सुमेरु रेनु सम ताही ।
 राम कृपा करि चितवा जाही ॥
 अति लघु रूप धरेउ हनुमाना ।
 पैठा नगर सुमिरि भगवाना ॥
 मंदिर मंदिर प्रति करि सोधा ।
 देखे जहँ तहँ अगनित जोधा ॥
 गयउ दसानन मंदिर माहीं ।
 अति बिचित्र कहि जात सो नाहीं ॥
 सयन किएँ देखा कपि तेही ।
 मंदिर महुँ न दीखि बैदेही ॥
 भवन एक पुनि दीख सुहावा ।
 हरि मंदिर तहँ भिन्न बनावा ॥

[दोहा ५]

रामायुध अंकित गृह सोभा बरनि न जाइ ।
 नव तुलसिका बृंद तहँ देखि हरष कपिराइ ॥
 लंका निसिचर निकर निवासा ।
 इहाँ कहाँ सज्जन कर बासा ॥
 मन महुँ तरक करैं कपि लागा ।
 तेहीं समय बिभीषनु जागा ॥

राम राम तेहिं सुमिरन कीन्हा ।
 हृदयँ हरष कपि सज्जन चीन्हा ॥
 एहि सन हठि करिहउँ पहिचानी ।
 साधु ते होइ न कारज हानी ॥
 बिप्र रूप धरि बचन सुनाए ।
 सुनत बिभीषन उठि तहँ आए ॥
 करि प्रनाम पूँछी कुसलाई ।
 बिप्र कहहु निज कथा बुझाई ॥
 की तुम्ह हरि दासन्ह महुँ कोई ।
 मोरें हृदय प्रीति अति होई ॥
 की तुम्ह रामु दीन अनुरागी ।
 आयहु मोहि करन बड़भागी ॥

[दोहा ६]

तब हनुमंत कही सब राम कथा निज नाम ।
 सुनत जुगल तन पुलक मन मगन सुमिरि गुन ग्राम ॥
 सुनहु पवनसुत रहनि हमारी ।
 जिमि दसनन्हि महुँ जीभ बिचारी ॥
 तात कबहुँ मोहि जानि अनाथा ।
 करिहहिं कृपा भानुकुल नाथा ॥
 तामस तनु कछु साधन नाहीं ।
 प्रीति न पद सरोज मन माहीं ॥
 अब मोहि भा भरोस हनुमंता ।
 बिनु हरिकृपा मिलहिं नहिं संता ॥

जों रघुबीर अनुग्रह कीन्हा ।
 तौ तुम्ह मोहि दरसु हठि दीन्हा ॥
 सुनहु बिभीषन प्रभु कै रीती ।
 करहिं सदा सेवक पर प्रीती ॥
 कहहु कवन में परम कुलीना ।
 कपि चंचल सबहीं बिधि हीना ॥
 प्रात लेइ जो नाम हमारा ।
 तेहि दिन ताहि न मिलै अहारा ॥

[दोहा ७]

अस मैं अधम सखा सुनु मोहू पर रघुबीर ।
 कीन्ही कृपा सुमिरि गुन भरे बिलोचन नीर ॥
 जानतहूँ अस स्वामि बिसारी ।
 फिरहिं ते काहे न होहिं दुखारी ॥
 एहि बिधि कहत राम गुन ग्रामा ।
 पावा अनिर्बाच्य बिश्रामा ॥
 पुनि सब कथा बिभीषन कही ।
 जेहि बिधि जनकसुता तहूँ रही ॥
 तब हनुमंत कहा सुनु भ्राता ।
 देखी चहउँ जानकी माता ॥
 जुगुति बिभीषन सकल सुनाई ।
 चलेउ पवनसुत बिदा कराई ॥
 करि सोइ रूप गयउ पुनि तहवाँ ।
 बन असोक सीता रह जहवाँ ॥

देखि मनहि महुँ कीन्ह प्रनामा ।
 बैठेहिं बीति जात निसि जामा ॥
 कृस तनु सीस जटा एक बेनी ।
 जपति हृदयँ रघुपति गुन श्रेनी ॥

[दोहा ८]

निज पद नयन दिऐँ मन राम पद कमल लीन ।
 परम दुखी भा पवनसुत देखि जानकी दीन ॥
 तरु पल्लव महुँ रहा लुकाई ।
 करइ बिचार करौँ का भाई ॥
 तेहि अवसर रावनु तहुँ आवा ।
 संग नारि बहु किऐँ बनावा ॥
 बहु बिधि खल सीतहि समुझावा ।
 साम दान भय भेद देखावा ॥
 कह रावनु सुनु सुमुखि सयानी ।
 मंदोदरी आदि सब रानी ॥
 तव अनुचरीं करउँ पन मोरा ।
 एक बार बिलोकु मम ओरा ॥
 तून धरि ओट कहति बैदेही ।
 सुमिरि अवधपति परम सनेही ॥
 सुनु दसमुख खद्योत प्रकासा ।
 कबहुँ कि नलिनी करइ बिकासा ॥
 अस मन समुझु कहति जानकी ।
 खल सुधि नहिं रघुबीर बान की ॥

सठ सूनें हरि आनेहि मोही ।
अधम निलज्ज लाज नहिं तोही ॥

[दोहा ९]

आपुहि सुनि खद्योत सम रामहि भानु समान ।
परुष बचन सुनि काढ़ि असि बोला अति खिसिआन ॥
सीता तैं मम कृत अपमाना ।
कटिहउँ तव सिर कठिन कृपाना ॥
नाहिं त सपदि मानु मम बानी ।
सुमुखि होति न त जीवन हानी ॥
स्याम सरोज दाम सम सुंदर ।
प्रभु भुज करि कर सम दसकंधर ॥
सो भुज कंठ कि तव असि घोरा ।
सुनु सठ अस प्रवान पन मोरा ॥
चंद्रहास हरु मम परितापं ।
रघुपति बिरह अनल संजातं ॥
सीतल निसित बहसि बर धारा ।
कह सीता हरु मम दुख भारा ॥
सुनत बचन पुनि मारन धावा ।
मयतनयाँ कहि नीति बुझावा ॥
कहेसि सकल निसिचरिन्ह बोलाई ।
सीतहि बहु बिधि त्रासहु जाई ॥
मास दिवस महुँ कहा न माना ।
तौ मैं मारबि काढ़ि कृपाना ॥

[दोहा १०]

भवन गयउ दसकंधर इहाँ पिसाचिनि बृंद ।
 सीतहि त्रास देखावहिं धरहिं रूप बहु मंद ॥
 त्रिजटा नाम राच्छसी एका ।
 राम चरन रति निपुन बिबेका ॥
 सबन्हौ बोलि सुनाएसि सपना ।
 सीतहि सेइ करहु हित अपना ॥
 सपनें बानर लंका जारी ।
 जातुधान सेना सब मारी ॥
 खर आरूढ़ नगन दससीसा ।
 मुंडित सिर खंडित भुज बीसा ॥
 एहि बिधि सो दच्छिन दिसि जाई ।
 लंका मनहुँ बिभीषन पाई ॥
 नगर फिरी रघुबीर दोहाई ।
 तब प्रभु सीता बोलि पठाई ॥
 यह सपना मैं कहउँ पुकारी ।
 होइहि सत्य गाँ दिन चारी ॥
 तासु बचन सुनि ते सब डरीं ।
 जनकसुता के चरनन्हि परीं ॥

[दोहा ११]

जहँ तहँ गई सकल तब सीता कर मन सोच ।
 मास दिवस बीतें मोहि मारिहि निसिचर पोच ॥
 त्रिजटा सन बोलीं कर जोरी ।
 मातु बिपति संगिनि तैं मोरी ॥

तजौं देह करु बेगि उपाई ।
 दुसह बिरहु अब नहिं सहि जाई ॥
 आनि काठ रचु चिता बनाई ।
 मातु अनल पुनि देहि लगाई ॥
 सत्य करहि मम प्रीति सयानी ।
 सुनै को श्रवन सूल सम बानी ॥
 सुनत बचन पद गहि समुझाएसि ।
 प्रभु प्रताप बल सुजसु सुनाएसि ॥
 निसि न अनल मिल सुनु सुकुमारी ।
 अस कहि सो निज भवन सिधारी ॥
 कह सीता बिधि भा प्रतिकूला ।
 मिलिहि न पावक मिटिहि न सूला ॥
 देखिअत प्रगट गगन अंगारा ।
 अवनि न आवत एकउ तारा ॥
 पावकमय ससि स्रवत न आगी ।
 मानहुँ मोहि जानि हतभागी ॥
 सुनहि बिनय मम बिटप असोका ।
 सत्य नाम करु हरु मम सोका ॥
 नूतन किसलय अनल समाना ।
 देहि अगिनि जनि करहि निदाना ॥
 देखि परम बिरहाकुल सीता ।
 सो छन कपिहि कलप सम बीता ॥

[सोरठा १२]

कपि करि हृदयँ बिचार दीन्हि मुद्रिका डारि तब ।
 जनु असोक अंगार दीन्ह हरषि उठि कर गहेउ ॥
 तब देखी मुद्रिका मनोहर ।
 राम नाम अंकित अति सुंदर ॥
 चकित चितव मुदरी पहिचानी ।
 हरष बिषाद हृदयँ अकुलानी ॥
 जीति को सकइ अजय रघुराई ।
 माया तें असि रचि नहिं जाई ॥
 सीता मन बिचार कर नाना ।
 मधुर बचन बोलेउ हनुमाना ॥
 रामचंद्र गुन बरनैं लागा ।
 सुनतहिं सीता कर दुख भागा ॥
 लागीं सुनैं श्रवन मन लाई ।
 आदिहु तें सब कथा सुनाई ॥
 श्रवनामृत जेहिं कथा सुहाई ।
 कही सो प्रगट होति किन भाई ॥
 तब हनुमंत निकट चलि गयऊ ।
 फिरि बैठीं मन बिसमय भयऊ ॥
 राम दूत मैं मातु जानकी ।
 सत्य सपथ करुनानिधान की ॥
 यह मुद्रिका मातु मैं आनी ।
 दीन्हि राम तुम्ह कहँ सहिदानी ॥

नर बानरहि संग कहु कैसें ।
कही कथा भइ संगति जैसें ॥

[दोहा १३]

कपि के बचन सप्रेम सुनि उपजा मन बिस्वास ।
जाना मन क्रम बचन यह कृपासिंधु कर दास ॥
हरिजन जानि प्रीति अति गाढ़ी ।
सजल नयन पुलकावलि बाढ़ी ॥
बूड़त बिरह जलधि हनुमाना ।
भयहु तात मो कहूँ जलजाना ॥
अब कहु कुसल जाऊँ बलिहारी ।
अनुज सहित सुख भवन खरारी ॥
कोमलचित कृपाल रघुराई ।
कपि केहि हेतु धरी निठुराई ॥
सहज बानि सेवक सुखदायक ।
कबहुँक सुरति करत रघुनायक ॥
कबहुँ नयन मम सीतल ताता ।
होइहहिं निरखि स्याम मृदु गाता ॥
बचनु न आव नयन भरे बारी ।
अहह नाथ हौं निपट बिसारी ॥
देखि परम बिरहाकुल सीता ।
बोला कपि मृदु बचन बिनीता ॥
मातु कुसल प्रभु अनुज समेता ।
तव दुख दुखी सुकृपा निकेता ॥

जनि जननी मानहु जियँ ऊना ।
तुम्ह ते प्रेमु राम कें दूना ॥

[दोहा १४]

रघुपति कर संदेसु अब सुनु जननी धरि धीर ।
अस कहि कपि गदगद भयउ भरे बिलोचन नीर ॥
कहेउ राम बियोग तव सीता ।
मो कहूँ सकल भए बिपरीता ॥
नव तरु किसलय मनहुँ कृसानू ।
कालनिसा सम निसि ससि भानू ॥
कुबलय बिपिन कुंतबन सरिसा ।
बारिद तपत तेल जनु बरिसा ॥
जे हित रहे करत तेइ पीरा ।
उरग स्वास सम त्रिबिध समीरा ॥
कहेहू तें कछु दुख घटि होई ।
काहि कहौं यह जान न कोई ॥
तत्व प्रेम कर मम अरु तोरा ।
जानत प्रिया एकु मनु मोरा ॥
सो मनु सदा रहत तोहि पाहीं ।
जानु प्रीति रसु एतनेहि माहीं ॥
प्रभु संदेसु सुनत बैदेही ।
मगन प्रेम तन सुधि नहिं तेही ॥
कह कपि हृदयँ धीर धरु माता ।
सुमिरु राम सेवक सुखदाता ॥

उर आनहु रघुपति प्रभुताई ।
सुनि मम बचन तजहु कदराई ॥

[दोहा १५]

निसिचर निकर पतंग सम रघुपति बान कृसानु ।
जननी हृदयँ धीर धरु जरे निसाचर जानु ॥
जौं रघुबीर होति सुधि पाई ।
करते नहिं बिलंबु रघुराई ॥
राम बान रबि उएँ जानकी ।
तम बरूथ कहँ जातुधान की ॥
अबहिं मातु मैं जाऊँ लवाई ।
प्रभु आयसु नहिं राम दोहाई ॥
कछुक दिवस जननी धरु धीरा ।
कपिन्ह सहित अइहहिं रघुबीरा ॥
निसिचर मारि तोहि लै जैहहिं ।
तिहुँ पुर नारदादि जसु गैहहिं ॥
हैं सुत कपि सब तुम्हहि समाना ।
जातुधान अति भट बलवाना ॥
मोरें हृदय परम संदेहा ।
सुनि कपि प्रगट कीन्हि निज देहा ॥
कनक भूधराकार सरीरा ।
समर भयंकर अतिबल बीरा ॥
सीता मन भरोस तब भयऊ ।
पुनि लघु रूप पवनसुत लयऊ ॥

[दोहा १६]

सुनु माता साखामृग नहिं बल बुद्धि बिसाल ।
 प्रभु प्रताप तें गरुड़हि खाइ परम लघु ब्याल ॥
 मन संतोष सुनत कपि बानी ।
 भगति प्रताप तेज बल सानी ॥
 आसिष दीन्हि रामप्रिय जाना ।
 होहु तात बल सील निधाना ॥
 अजर अमर गुननिधि सुत होहू ।
 करहुँ बहुत रघुनायक छोहू ॥
 करहुँ कृपा प्रभु अस सुनि काना ।
 निर्भर प्रेम मगन हनुमाना ॥
 बार बार नाएसि पद सीसा ।
 बोला बचन जोरि कर कीसा ॥
 अब कृतकृत्य भयउँ मैं माता ।
 आसिष तव अमोघ बिख्याता ॥
 सुनहु मातु मोहि अतिसय भूखा ।
 लागि देखि सुंदर फल रूखा ॥
 सुनु सुत करहिं बिपिन रखवारी ।
 परम सुभट रजनीचर भारी ॥
 तिन्ह कर भय माता मोहि नाहीं ।
 जौं तुम्ह सुख मानहु मन माहीं ॥

[दोहा १७]

देखि बुद्धि बल निपुन कपि कहेउ जानकीं जाहु ।
 रघुपति चरन हृदयँ धरि तात मधुर फल खाहु ॥

चलेउ नाइ सिरु पैठेउ बागा ।
 फल खाएसि तरु तोरैं लागा ॥
 रहे तहाँ बहु भट रखवारे ।
 कछु मारेसि कछु जाइ पुकारे ॥
 नाथ एक आवा कपि भारी ।
 तेहिं असोक बाटिका उजारी ॥
 खाएसि फल अरु बिटप उपारे ।
 रच्छक मर्दि मर्दि महि डारे ॥
 सुनि रावन पठए भट नाना ।
 तिन्हहि देखि गर्जेउ हनुमाना ॥
 सब रजनीचर कपि संघारे ।
 गए पुकारत कछु अधमारे ॥
 पुनि पठयउ तेहिं अच्छकुमारा ।
 चला संग लै सुभट अपारा ॥
 आवत देखि बिटप गहि तर्जा ।
 ताहि निपाति महाधुनि गर्जा ॥

[दोहा १८]

कछु मारेसि कछु मर्देसि कछु मिलएसि धरि धूरि ।
 कछु पुनि जाइ पुकारे प्रभु मर्कट बल भूरि ॥
 सुनि सुत बध लंकेस रिसाना ।
 पठएसि मेघनाद बलवाना ॥
 मारसि जनि सुत बाँधेसु ताही ।
 देखिअ कपिहि कहाँ कर आही ॥

चला इंद्रजित अतुलित जोधा ।
 बंधु निधन सुनि उपजा क्रोधा ॥
 कपि देखा दारुन भट आवा ।
 कटकटाइ गर्जा अरु धावा ॥
 अति बिसाल तरु एक उपारा ।
 बिरथ कीन्ह लंकेस कुमारा ॥
 रहे महाभट ताके संग ।
 गहि गहि कपि मर्दइ निज अंगा ॥
 तिन्हहि निपाति ताहि सन बाजा ।
 भिरे जुगल मानहुँ गजराजा ॥
 मुठिका मारि चढ़ा तरु जाई ।
 ताहि एक छन मुरुछा आई ॥
 उठि बहोरि कीन्हिसि बहु माया ।
 जीति न जाइ प्रभंजन जाया ॥

[दोहा १९]

ब्रह्म अस्त्र तेहि साँधा कपि मन कीन्ह बिचार ।
 जाँ न ब्रह्मसर मानउँ महिमा मिटइ अपार ॥
 ब्रह्मबान कपि कहुँ तेहिं मारा ।
 परतिहुँ बार कटकु संघारा ॥
 तेहिं देखा कपि मुरुछित भयऊ ।
 नागपास बाँधेसि लै गयऊ ॥
 जासु नाम जपि सुनहु भवानी ।
 भव बंधन काटहिं नर ग्यानी ॥

तासु दूत कि बंध तरु आवा ।
 प्रभु कारज लागि कपिहिं बँधावा ॥
 कपि बंधन सुनि निसिचर धाए ।
 कौतुक लागि सभाँ सब आए ॥
 दसमुख सभा दीखि कपि जाई ।
 कहि न जाइ कछु अति प्रभुताई ॥
 कर जोरें सुर दिसिप बिनीता ।
 भृकुटि बिलोकत सकल सभीता ॥
 देखि प्रताप न कपि मन संका ।
 जिमि अहिगन महुँ गरुड़ असंका ॥

[दोहा २०]

कपिहि बिलोकि दसानन बिहसा कहि दुर्बाद ।
 सुत बध सुरति कीन्हि पुनि उपजा हृदयँ बिषाद ॥
 कह लंकेस कवन तैं कीसा ।
 केहि कें बल घालेहि बन खीसा ॥
 की धौं श्रवन सुनेहि नहिं मोही ।
 देखउँ अति असंक सठ तोही ॥
 मारे निसिचर केहिं अपराधा ।
 कहु सठ तोहि न प्रान कइ बाधा ॥
 सुनु रावन ब्रह्मांड निकाया ।
 पाइ जासु बल बिरचति माया ॥
 जाकें बल बिरंचि हरि ईसा ।
 पालत सृजत हरत दससीसा ॥

जा बल सीस धरत सहसानन ।
 अंडकोस समेत गिरि कानन ॥
 धरड़ जो बिबिध देह सुरत्राता ।
 तुम्ह से सठन्ह सिखावनु दाता ॥
 हर कोदंड कठिन जेहिं भंजा ।
 तेहि समेत नृप दल मद गंजा ॥
 खर दूषन त्रिसिरा अरु बाली ।
 बधे सकल अतुलित बल साली ॥

[दोहा २१]

जाके बल लवलेस तें जितेहु चराचर झारि ।
 तासु दूत मैं जा करि हरि आनेहु प्रिय नारि ॥
 जानउँ मैं तुम्हारि प्रभुताई ।
 सहसबाहु सन परी लराई ॥
 समर बालि सन करि जसु पावा ।
 सुनि कपि बचन बिहसि बिहरावा ॥
 खायउँ फल प्रभु लागी भूँखा ।
 कपि सुभाव तें तोरेउँ रूखा ॥
 सब कें देह परम प्रिय स्वामी ।
 मारहिं मोहि कुमारग गामी ॥
 जिन्ह मोहि मारा ते मैं मारे ।
 तेहि पर बाँधेउँ तनयँ तुम्हारे ॥
 मोहि न कछु बाँधे कइ लाजा ।
 कीन्ह चहउँ निज प्रभु कर काजा ॥

बिनती करउँ जोरि कर रावन ।
 सुनहु मान तजि मोर सिखावन ॥
 देखहु तुम्ह निज कुलहि बिचारी ।
 भ्रम तजि भजहु भगत भय हारी ॥
 जाकें डर अति काल डेराई ।
 जो सुर असुर चराचर खाई ॥
 तासों बयरु कबहुँ नहिं कीजै ।
 मोरे कहें जानकी दीजै ॥

[दोहा २२]

प्रनतपाल रघुनायक करुना सिंधु खरारि ।
 गएँ सरन प्रभु राखिहैं तव अपराध बिसारि ॥
 राम चरन पंकज उर धरहू ।
 लंका अचल राजु तुम्ह करहू ॥
 रिषि पुलस्ति जसु बिमल मयंका ।
 तेहि ससि महुँ जनि होहु कलंका ॥
 राम नाम बिनु गिरा न सोहा ।
 देखु बिचारि त्यागि मद मोहा ॥
 बसन हीन नहिं सोह सुरारी ।
 सब भूषन भूषित बर नारी ॥
 राम बिमुख संपति प्रभुताई ।
 जाइ रही पाई बिनु पाई ॥
 सजल मूल जिन्ह सरितन्ह नाहीं ।
 बरषि गएँ पुनि तबहिं सुखाहीं ॥

सुनु दसकंठ कहउँ पन रोपी ।
 बिमुख राम त्राता नहिं कोपी ॥
 संकर सहस बिष्णु अज तोही ।
 सकहिं न राखि राम कर द्रोही ॥

[दोहा २३]

मोहमूल बहु सूल प्रद त्यागहु तम अभिमान ।
 भजहु राम रघुनायक कृपा सिंधु भगवान ॥
 जदपि कही कपि अति हित बानी ।
 भगति बिबेक बिरति नय सानी ॥
 बोला बिहसि महा अभिमानी ।
 मिला हमहि कपि गुर बड़ ग्यानी ॥
 मृत्यु निकट आई खल तोही ।
 लागेसि अधम सिखावन मोही ॥
 उलटा होइहि कह हनुमाना ।
 मतिभ्रम तोर प्रगट मैं जाना ॥
 सुनि कपि बचन बहुत खिसिआना ।
 बेगि न हरहु मूढ़ कर प्राणा ॥
 सुनत निसाचर मारन धाए ।
 सचिवन्ह सहित बिभीषनु आए ॥
 नाइ सीस करि बिनय बहूता ।
 नीति बिरोध न मारिअ दूता ॥
 आन दंड कछु करिअ गोसाँई ।
 सबहीं कहा मंत्र भल भाई ॥

सुनत बिहसि बोला दसकंधर ।
अंग भंग करि पठइअ बंदर ॥

[दोहा २४]

कपि कें ममता पूँछ पर सबहि कहउँ समुझाइ ।
तेल बोरि पट बाँधि पुनि पावक देहु लगाइ ॥
पूँछहीन बानर तहँ जाइहि ।
तब सठ निज नाथहि लइ आइहि ॥
जिन्ह कै कीन्हिसि बहुत बड़ाई ।
देखउँ मैं तिन्ह कै प्रभुताई ॥
बचन सुनत कपि मन मुसुकाना ।
भइ सहाय सारद मैं जाना ॥
जातुधान सुनि रावन बचना ।
लागे रचैं मूढ़ सोइ रचना ॥
रहा न नगर बसन घृत तेला ।
बाढ़ी पूँछ कीन्ह कपि खेला ॥
कौतुक कहँ आए पुरबासी ।
मारहिं चरन करहिं बहु हाँसी ॥
बाजहिं ढोल देहिं सब तारी ।
नगर फेरि पुनि पूँछ प्रजारी ॥
पावक जरत देखि हनुमंता ।
भयउ परम लघुरूप तुरंता ॥
निबुकि चढ़ेउ कपि कनक अटारीं ।
भई सभीत निसाचर नारीं ॥

[दोहा २५]

हरि प्रेरित तेहि अवसर चले मरुत उनचास ।
 अट्टहास करि गर्जा कपि बढि लाग अकास ॥
 देह बिसाल परम हरुआई ।
 मंदिर तें मंदिर चढ़ धाई ॥
 जरइ नगर भा लोग बिहाला ।
 झपट लपट बहु कोटि कराला ॥
 तात मातु हा सुनिअ पुकारा ।
 एहिं अवसर को हमहि उबारा ॥
 हम जो कहा यह कपि नहिं होई ।
 बानर रूप धरें सुर कोई ॥
 साधु अवग्या कर फलु ऐसा ।
 जरइ नगर अनाथ कर जैसा ॥
 जारा नगरु निमिष एक माहीं ।
 एक बिभीषन कर गृह नाहीं ॥
 ता कर दूत अनल जेहिं सिरिजा ।
 जरा न सो तेहि कारन गिरिजा ॥
 उलटि पलटि लंका सब जारी ।
 कूदि परा पुनि सिंधु मझारी ॥

[दोहा २६]

पूँछ बुझाइ खोइ श्रम धरि लघु रूप बहोरि ।
 जनकसुता कें आगें ठाढ़ भयउ कर जोरि ॥

मातु मोहि दीजे कछु चीन्हा ।
 जैसें रघुनायक मोहि दीन्हा ॥
 चूड़ामनि उतारि तब दयऊ ।
 हरष समेत पवनसुत लयऊ ॥
 कहेहु तात अस मोर प्रनामा ।
 सब प्रकार प्रभु पूरनकामा ॥
 दीन दयाल बिरिदु संभारी ।
 हरहु नाथ मम संकट भारी ॥
 तात सक्रसुत कथा सुनाएहु ।
 बान प्रताप प्रभुहि समुझाएहु ॥
 मास दिवस महँ नाथु न आवा ।
 तौ पुनि मोहि जिअत नहिं पावा ॥
 कहु कपि केहि बिधि राखौं प्राणा ।
 तुम्हहू तात कहत अब जाना ॥
 तोहि देखि सीतलि भइ छाती ।
 पुनि मो कहँ सोइ दिनु सो राती ॥

[दोहा २७]

जनकसुतहि समुझाइ करि बहु बिधि धीरजु दीन्ह ।
 चरन कमल सिरु नाइ कपि गवनु राम पहिं कीन्ह ॥
 चलत महाधुनि गर्जेसि भारी ।
 गर्भ स्त्रवहिं सुनि निसिचर नारी ॥
 नाघि सिंधु एहि पारहि आवा ।
 सबद किलिकिला कपिन्ह सुनावा ॥

हरषे सब बिलोकि हनुमाना ।
 नूतन जन्म कपिन्ह तब जाना ॥
 मुख प्रसन्न तन तेज बिराजा ।
 कीन्हेसि रामचंद्र कर काजा ॥
 मिले सकल अति भए सुखारी ।
 तलफत मीन पाव जिमि बारी ॥
 चले हरषि रघुनायक पासा ।
 पूँछत कहत नवल इतिहासा ॥
 तब मधुबन भीतर सब आए ।
 अंगद संमत मधु फल खाए ॥
 रखवारे जब बरजन लागे ।
 मुष्टि प्रहार हनत सब भागे ॥

[दोहा २८]

जाइ पुकारे ते सब बन उजार जुबराज ।
 सुनि सुग्रीव हरष कपि करि आए प्रभु काज ॥
 जौं न होति सीता सुधि पाई ।
 मधुबन के फल सकहिं कि खाई ॥
 एहि बिधि मन बिचार कर राजा ।
 आइ गए कपि सहित समाजा ॥
 आइ सबन्हि नावा पद सीसा ।
 मिलेउ सबन्हि अति प्रेम कपीसा ॥
 पूँछी कुसल कुसल पद देखी ।
 राम कृपाँ भा काजु बिसेषी ॥

नाथ काजु कीन्हेउ हनुमाना ।
 राखे सकल कपिन्ह के प्राना ॥
 सुनि सुग्रीव बहुरि तेहि मिलेऊ ।
 कपिन्ह सहित रघुपति पहिं चलेऊ ॥
 राम कपिन्ह जब आवत देखा ।
 किऐं काजु मन हरष बिसेषा ॥
 फटिक सिला बैठे द्वौ भाई ।
 परे सकल कपि चरनन्हि जाई ॥

[दोहा २९]

प्रीति सहित सब भेटे रघुपति करुना पुंज ।
 पूँछी कुसल नाथ अब कुसल देखि पद कंज ॥
 जामवंत कह सुनु रघुराया ।
 जा पर नाथ करहु तुम्ह दाया ॥
 ताहि सदा सुभ कुसल निरंतर ।
 सुर नर मुनि प्रसन्न ता ऊपर ॥
 सोइ बिजई बिनई गुन सागर ।
 तासु सुजसु त्रैलोक उजागर ॥
 प्रभु कीं कृपा भयउ सबु काजू ।
 जन्म हमार सुफल भा आजू ॥
 नाथ पवनसुत कीन्हि जो करनी ।
 सहसहुँ मुख न जाइ सो बरनी ॥
 पवनतनय के चरित सुहाए ।
 जामवंत रघुपतिहि सुनाए ॥

सुनत कृपानिधि मन अति भाए ।
 पुनि हनुमान हरषि हियँ लाए ॥
 कहहु तात केहि भाँति जानकी ।
 रहति करति रच्छा स्वप्राण की ॥

[दोहा ३०]

नाम पाहरू दिवस निसि ध्यान तुम्हार कपाट ।
 लोचन निज पद जंत्रित जाहिं प्राण केहिं बाट ॥
 चलत मोहि चूड़ामनि दीन्ही ।
 रघुपति हृदयँ लाइ सोइ लीन्ही ॥
 नाथ जुगल लोचन भरि बारी ।
 बचन कहे कछु जनककुमारी ॥
 अनुज समेत गहेहु प्रभु चरना ।
 दीन बंधु प्रनतारति हरना ॥
 मन क्रम बचन चरन अनुरागी ।
 केहिं अपराध नाथ हौं त्यागी ॥
 अवगुन एक मोर मैं माना ।
 बिछुरत प्राण न कीन्ह पयाना ॥
 नाथ सो नयनन्हि को अपराधा ।
 निसरत प्राण करहिं हठि बाधा ॥
 बिरह अगिनि तनु तूल समीरा ।
 स्वास जरइ छन माहिं सरीरा ॥
 नयन स्रवहिं जलु निज हित लागी ।
 जरैं न पाव देह बिरहागी ॥

सीता कै अति बिपति बिसाला ।
बिनहिं कहें भलि दीनदयाला ॥

[दोहा ३१]

निमिष निमिष करुनानिधि जाहिं कलप सम बीति ।
बेगि चलिअ प्रभु आनिअ भुज बल खल दल जीति ॥
सुनि सीता दुख प्रभु सुख अयना ।
भरि आए जल राजिव नयना ॥
बचन कायँ मन मम गति जाही ।
सपनेहुँ बूझिअ बिपति कि ताही ॥
कह हनुमंत बिपति प्रभु सोई ।
जब तव सुमिरन भजन न होई ॥
केतिक बात प्रभु जातुधान की ।
रिपुहि जीति आनिबी जानकी ॥
सुनु कपि तोहि समान उपकारी ।
नहिं कोउ सुर नर मुनि तनुधारी ॥
प्रति उपकार करौं का तोरा ।
सनमुख होइ न सकत मन मोरा ॥
सुनु सुत तोहि उरिन मैं नाहीं ।
देखेउँ करि बिचार मन माहीं ॥
पुनि पुनि कपिहि चितव सुरत्राता ।
लोचन नीर पुलक अति गाता ॥

[दोहा ३२]

सुनि प्रभु बचन बिलोकि मुख गात हरषि हनुमंत ।
चरन परेउ प्रेमाकुल त्राहि त्राहि भगवंत ॥

बार बार प्रभु चहइ उठावा ।
 प्रेम मगन तेहि उठब न भावा ॥
 प्रभु कर पंकज कपि कें सीसा ।
 सुमिरि सो दसा मगन गौरीसा ॥
 सावधान मन करि पुनि संकर ।
 लागे कहन कथा अति सुंदर ॥
 कपि उठाइ प्रभु हृदयँ लगावा ।
 कर गहि परम निकट बैठावा ॥
 कहु कपि रावन पालित लंका ।
 केहि बिधि दहेउ दुर्ग अति बंका ॥
 प्रभु प्रसन्न जाना हनुमाना ।
 बोला बचन बिगत अभिमाना ॥
 साखामृग कै बड़ि मनुसाई ।
 साखा तें साखा पर जाई ॥
 नाघि सिंधु हाटकपुर जारा ।
 निसिचर गन बधि बिपिन उजारा ॥
 सो सब तव प्रताप रघुराई ।
 नाथ न कछू मोरि प्रभुताई ॥

[दोहा ३३]

ता कहँ प्रभु कछु अगम नहिं जा पर तुम्ह अनुकूल ।
 तव प्रभावँ बड़वानलहि जारि सकइ खलु तूल ॥
 नाथ भगति अति सुखदायनी ।
 देहु कृपा करि अनपायनी ॥

सुनि प्रभु परम सरल कपि बानी ।
 एवमस्तु तब कहेउ भवानी ॥
 उमा राम सुभाउ जेहिं जाना ।
 ताहि भजनु तजि भाव न आना ॥
 यह संबाद जासु उर आवा ।
 रघुपति चरन भगति सोइ पावा ॥
 सुनि प्रभु बचन कहहिं कपिबृन्दा ।
 जय जय जय कृपाल सुखकंदा ॥
 तब रघुपति कपिपतिहि बोलावा ।
 कहा चलैं कर करहु बनावा ॥
 अब बिलंबु केहि कारन कीजे ।
 तुरत कपिन्ह कहूँ आयसु दीजे ॥
 कौतुक देखि सुमन बहु बरषी ।
 नभ तें भवन चले सुर हरषी ॥

[दोहा ३४]

कपिपति बेगि बोलाए आए जूथप जूथ ।
 नाना बरन अतुल बल बानर भालु बरूथ ॥
 प्रभु पद पंकज नावहिं सीसा ।
 गर्जहिं भालु महाबल कीसा ॥
 देखी राम सकल कपि सेना ।
 चितइ कृपा करि राजिव नैना ॥
 राम कृपा बल पाइ कपिन्दा ।
 भए पच्छजुत मनहुँ गिरिन्दा ॥

हरषि राम तब कीन्ह पयाना ।
 सगुन भए सुंदर सुभ नाना ॥
 जासु सकल मंगलमय कीती ।
 तासु पयान सगुन यह नीती ॥
 प्रभु पयान जाना बैदेहीं ।
 फरकि बाम अँग जनु कहि देहीं ॥
 जोड़ जोड़ सगुन जानकिहि होई ।
 असगुन भयउ रावनहि सोई ॥
 चला कटकु को बरनैं पारा ।
 गर्जहि बानर भालु अपारा ॥
 नख आयुध गिरि पादपधारी ।
 चले गगन महि इच्छाचारी ॥
 केहरिनाद भालु कपि करहीं ।
 डगमगाहिं दिग्गज चिक्करहीं ॥

छं०—चिक्करहिं दिग्गज डोल महि गिरि
 लोल सागर खरभरे ।
 मन हरष सभ गंधर्व सुर मुनि
 नाग किंनर दुख टरे ॥
 कटकटहिं मर्कट बिकट भट
 बहु कोटि कोटिन्ह धावहीं ।
 जय राम प्रबल प्रताप कोसल—
 नाथ गुन गन गावहीं ॥ १ ॥
 सहि सक न भार उदार अहिपति
 बार बारहिं मोहई ।

गह दसन पुनि पुनि कमठ पृष्ट
 कठोर सो किमि सोहई ॥
 रघुबीर रुचिर प्रयान प्रस्थिति
 जानि परम सुहावनी ।
 जनु कमठ खर्पर सर्पराज सो
 लिखत अबिचल पावनी ॥ २ ॥

[दोहा ३५]

एहि बिधि जाइ कृपानिधि उतरे सागर तीर ।
 जहँ तहँ लागे खान फल भालु बिपुल कपि बीर ॥
 उहाँ निसाचर रहहिं ससंका ।
 जब तें जारि गयउ कपि लंका ॥
 निज निज गृहँ सब करहिं बिचारा ।
 नहिं निसिचर कुल केर उबारा ॥
 जासु दूत बल बरनि न जाई ।
 तेहि आएँ पुर कवन भलाई ॥
 दूतिन्ह सन सुनि पुरजन बानी ।
 मंदोदरी अधिक अकुलानी ॥
 रहसि जोरि कर पति पग लागी ।
 बोली बचन नीति रस पागी ॥
 कंत करष हरि सन परिहरहू ।
 मोर कहा अति हित हियँ धरहू ॥
 समुझत जासु दूत कइ करनी ।
 स्रवहिं गर्भ रजनीचर घरनी ॥

तासु नारि निज सचिव बोलाई ।
 पठवहु कंत जो चहहु भलाई ॥
 तव कुल कमल बिपिन दुखदाई ।
 सीता सीत निसा सम आई ॥
 सुनहु नाथ सीता बिनु दीन्हें ।
 हित न तुम्हार संभु अज कीन्हें ॥

[दोहा ३६]

राम बान अहि गन सरिस निकर निसाचर भेक ।
 जब लगि ग्रसत न तब लगि जतनु करहु तजि टेक ॥
 श्रवन सुनी सठ ता करि बानी ।
 बिहसा जगत बिदित अभिमानी ॥
 सभय सुभाउ नारि कर साचा ।
 मंगल महुँ भय मन अति काचा ॥
 जौं आवड़ मर्कट कटकाई ।
 जिअहिं बिचारे निसिचर खाई ॥
 कंपहिं लोकप जाकीं त्रासा ।
 तासु नारि सभीत बड़ि हासा ॥
 अस कहि बिहसि ताहि उर लाई ।
 चलेउ सभाँ ममता अधिकाई ॥
 मंदोदरी हृदयँ कर चिंता ।
 भयउ कंत पर बिधि बिपरीता ॥
 बैठेउ सभाँ खबरि असि पाई ।
 सिंधु पार सेना सब आई ॥

बूझेसि सचिव उचित मत कहहू ।
 ते सब हँसे मष्ट करि रहहू ॥
 जितेहु सुरासुर तब श्रम नाही ।
 नर बानर केहि लेखे माहीं ॥

[दोहा ३७]

सचिव बैद गुर तीनि जौं प्रिय बोलहिं भय आस ।
 राज धर्म तन तीनि कर होइ बेगिहीं नास ॥
 सोइ रावन कहँ बनी सहाई ।
 अस्तुति करहिं सुनाइ सुनाई ॥
 अवसर जानि बिभीषनु आवा ।
 भ्राता चरन सीसु तेहिं नावा ॥
 पुनि सिरु नाइ बैठ निज आसन ।
 बोला बचन पाइ अनुसासन ॥
 जौ कृपाल पूँछिहु मोहि बाता ।
 मति अनुरूप कहउँ हित ताता ॥
 जो आपन चाहै कल्याना ।
 सुजसु सुमति सुभ गति सुख नाना ॥
 सो परनारि लिलार गोसाईं ।
 तजउ चउथि के चंद कि नाई ॥
 चौदह भुवन एक पति होई ।
 भूतद्रोह तिष्टइ नहिं सोई ॥
 गुन सागर नागर नर जोऊ ।
 अलप लोभ भल कहइ न कोऊ ॥

[दोहा ३८]

काम क्रोध मद लोभ सब नाथ नरक के पंथ ।
 सब परिहरि रघुबीरहि भजहु भजहिं जेहि संत ॥
 तात राम नहिं नर भूपाला ।
 भुवनेस्वर कालहु कर काला ॥
 ब्रह्म अनामय अज भगवंता ।
 व्यापक अजित अनादि अनंता ॥
 गो द्विज धेनु देव हितकारी ।
 कृपा सिंधु मानुष तनुधारी ॥
 जन रंजन भंजन खल ब्राता ।
 बेद धर्म रच्छक सुनु भ्राता ॥
 ताहि बयरु तजि नाइअ माथा ।
 प्रनतारति भंजन रघुनाथा ॥
 देहु नाथ प्रभु कहूँ बैदेही ।
 भजहु राम बिनु हेतु सनेही ॥
 सरन गाँ प्रभु ताहु न त्यागा ।
 बिस्व द्रोह कृत अघ जेहि लागा ॥
 जासु नाम त्रय ताप नसावन ।
 सोइ प्रभु प्रगट समुझु जियँ रावन ॥

[दोहा ३९ (क), (ख)]

बार बार पद लागउँ बिनय करउँ दससीस ।
 परिहरि मान मोह मद भजहु कोसलाधीस ॥
 मुनि पुलस्ति निज सिष्य सन कहि पठई यह बात ।
 तुरत सो मैं प्रभु सन कही पाइ सुअवसरु तात ॥

माल्यवंत अति सचिव सयाना ।
 तासु बचन सुनि अति सुख माना ॥
 तात अनुज तव नीति बिभूषन ।
 सो उर धरहु जो कहत बिभीषन ॥
 रिपु उतकरष कहत सठ दोऊ ।
 दूरि न करहु इहाँ हइ कोऊ ॥
 माल्यवंत गृह गयउ बहोरी ।
 कहइ बिभीषनु पुनि कर जोरी ॥
 सुमति कुमति सब कें उर रहहीं ।
 नाथ पुरान निगम अस कहहीं ॥
 जहाँ सुमति तहँ संपति नाना ।
 जहाँ कुमति तहँ बिपति निदाना ॥
 तव उर कुमति बसी बिपरीता ।
 हित अनहित मानहु रिपु प्रीता ॥
 कालराति निसिचर कुल केरी ।
 तेहि सीता पर प्रीति घनेरी ॥

[दोहा ४०]

तात चरन गहि मागउँ राखहु मोर दुलार ।
 सीता देहु राम कहूँ अहित न होइ तुम्हार ॥
 बुध पुरान श्रुति संमत बानी ।
 कही बिभीषन नीति बखानी ॥
 सुनत दसानन उठा रिसाई ।
 खल तोहि निकट मृत्यु अब आई ॥

जिअसि सदा सठ मोर जिआवा ।
 रिपु कर पच्छ मूढ़ तोहि भावा ॥
 कहसि न खल अस को जग माहीं ।
 भुज बल जाहि जिता मैं नाहीं ॥
 मम पुर बसि तपसिन्ह पर प्रीती ।
 सठ मिलु जाइ तिन्हहि कहु नीती ॥
 अस कहि कीन्हेसि चरन प्रहारा ।
 अनुज गहे पद बारहिं बारा ॥
 उमा संत कइ इहइ बड़ाई ।
 मंद करत जो करइ भलाई ॥
 तुम्ह पितु सरिस भलेहिं मोहि मारा ।
 रामु भजें हित नाथ तुम्हारा ॥
 सचिव संग लै नभ पथ गयऊ ।
 सबहि सुनाइ कहत अस भयऊ ॥

[दोहा ४१]

रामु सत्यसंकल्प प्रभु सभा कालबस तोरि ।
 मैं रघुबीर सरन अब जाउँ देहु जनि खोरि ॥
 अस कहि चला बिभीषनु जबहीं ।
 आयूहीन भए सब तबहीं ॥
 साधु अवग्या तुरत भवानी ।
 कर कल्याण अखिल कै हानी ॥
 रावन जबहिं बिभीषन त्यागा ।
 भयउ बिभव बिनु तबहिं अभागा ॥

चलेउ हरषि रघुनायक पाहीं ।
 करत मनोरथ बहु मन माहीं ॥
 देखिहउँ जाइ चरन जलजाता ।
 अरुन मृदुल सेवक सुखदाता ॥
 जे पद परसि तरी रिषिनारी ।
 दंडक कानन पावनकारी ॥
 जे पद जनकसुताँ उर लाए ।
 कपट कुरंग संग धर धाए ॥
 हर उर सर सरोज पद जेई ।
 अहोभाग्य मैं देखिहउँ तेई ॥

[दोहा ४२]

जिन्ह पायन्ह के पादुकन्हि भरतु रहे मन लाइ ।
 ते पद आजु बिलोकिहउँ इन्ह नयनन्हि अब जाइ ॥
 एहि बिधि करत सप्रेम बिचारा ।
 आयउ सपदि सिंधु एहिं पारा ॥
 कपिन्ह बिभीषनु आवत देखा ।
 जाना कोउ रिपु दूत बिसेषा ॥
 ताहि राखि कपीस पहिं आए ।
 समाचार सब ताहि सुनाए ॥
 कह सुग्रीव सुनहु रघुराई ।
 आवा मिलन दसानन भाई ॥
 कह प्रभु सखा बूझिऐ काहा ।
 कहइ कपीस सुनहु नरनाहा ॥

जानि न जाइ निसाचर माया ।
 कामरूप केहि कारन आया ॥
 भेद हमार लेन सठ आवा ।
 राखिअ बाँधि मोहि अस भावा ॥
 सखा नीति तुम्ह नीकि बिचारी ।
 मम पन सरनागत भयहारी ॥
 सुनि प्रभु बचन हरष हनुमाना ।
 सरनागत बच्छल भगवाना ॥

[दोहा ४३]

सरनागत कहूँ जे तजहिं निज अनहित अनुमानि ।
 ते नर पावरँ पापमय तिन्हहि बिलोकत हानि ॥
 कोटि बिप्र बध लागहिं जाहू ।
 आएँ सरन तजउँ नहिं ताहू ॥
 सनमुख होइ जीव मोहि जबहीं ।
 जन्म कोटि अघ नासहिं तबहीं ॥
 पापवंत कर सहज सुभाऊ ।
 भजनु मोर तेहि भाव न काऊ ॥
 जौं पै दुष्ट हृदय सोइ होई ।
 मोरें सनमुख आव कि सोई ॥
 निर्मल मन जन सो मोहि पावा ।
 मोहि कपट छल छिद्र न भावा ॥
 भेद लेन पठवा दससीसा ।
 तबहुँ न कछु भय हानि कपीसा ॥

जग महुँ सखा निसाचर जेते ।
 लछिमनु हनइ निमिष महुँ तेते ॥
 जौं सभीत आवा सरनाई ।
 रखिहउँ ताहि प्रान की नाई ॥

[दोहा ४४]

उभय भाँति तेहि आनहु हँसि कह कृपानिकेत ।
 जय कृपाल कहि कपि चले अंगद हनू समेत ॥
 सादर तेहि आगें करि बानर ।
 चले जहाँ रघुपति करुनाकर ॥
 दूरिहि ते देखे द्वौ भ्राता ।
 नयनानंद दान के दाता ॥
 बहुरि राम छबिधाम बिलोकी ।
 रहेउ ठटुकि एकटक पल रोकी ॥
 भुज प्रलंब कंजारुन लोचन ।
 स्यामल गात प्रनत भय मोचन ॥
 सिंघ कंध आयत उर सोहा ।
 आनन अमित मदन मन मोहा ॥
 नयन नीर पुलकित अति गाता ।
 मन धरि धीर कही मृदु बाता ॥
 नाथ दसानन कर मैं भ्राता ।
 निसिचर बंस जनम सुरत्राता ॥
 सहज पापप्रिय तामस देहा ।
 जथा उलूकहि तम पर नेहा ॥

[दोहा ४५]

श्रवन सुजसु सुनि आयउँ प्रभु भंजन भव भीर ।
 त्राहि त्राहि आरति हरन सरन सुखद रघुबीर ॥
 अस कहि करत दंडवत देखा ।
 तुरत उठे प्रभु हरष बिसेषा ॥
 दीन बचन सुनि प्रभु मन भावा ।
 भुज बिसाल गहि हृदयँ लगावा ॥
 अनुज सहित मिलि ढिग बैठारी ।
 बोले बचन भगत भयहारी ॥
 कहु लंकेस सहित परिवारा ।
 कुसल कुठाहर बास तुम्हारा ॥
 खल मंडली बसहु दिनु राती ।
 सखा धरम निबहइ केहि भाँती ॥
 मैं जानउँ तुम्हारि सब रीती ।
 अति नय निपुन न भाव अनीती ॥
 बरु भल बास नरक कर ताता ।
 दुष्ट संग जनि देइ बिधाता ॥
 अब पद देखि कुसल रघुराया ।
 जौं तुम्ह कीन्हि जानि जन दाया ॥

[दोहा ४६]

तब लगि कुसल न जीव कहुँ सपनेहुँ मन बिश्राम ।
 जब लगि भजत न राम कहुँ सोक धाम तजि काम ॥
 तब लगि हृदयँ बसत खल नाना ।
 लोभ मोह मच्छर मद माना ॥

जब लागि उर न बसत रघुनाथा ।
 धरें चाप सायक कटि भाथा ॥
 ममता तरुन तमी अँधिआरी ।
 राग द्वेष उलूक सुखकारी ॥
 तब लागि बसति जीव मन माहीं ।
 जब लागि प्रभु प्रताप रबि नाहीं ॥
 अब मैं कुसल मिटे भय भारे ।
 देखि राम पद कमल तुम्हारे ॥
 तुम्ह कृपाल जा पर अनुकूला ।
 ताहि न ब्याप त्रिबिध भव सूला ॥
 मैं निसिचर अति अधम सुभाऊ ।
 सुभ आचरनु कीन्ह नहिं काऊ ॥
 जासु रूप मुनि ध्यान न आवा ।
 तेहिं प्रभु हरषि हृदयँ मोहि लावा ॥

[दोहा ४७]

अहोभाग्य मम अमित अति राम कृपा सुख पुंज ।
 देखेउँ नयन बिरंचि सिव सेव्य जुगल पद कंज ॥
 सुनहु सखा निज कहउँ सुभाऊ ।
 जान भुसुंडि संभु गिरिजाऊ ॥
 जौं नर होइ चराचर द्रोही ।
 आवै सभय सरन तकि मोही ॥
 तजि मद मोह कपट छल नाना ।
 करउँ सद्य तेहि साधु समाना ॥

जननी जनक बंधु सुत दारा ।
 तनु धनु भवन सुहृद परिवारा ॥
 सब कै ममता ताग बटोरी ।
 मम पद मनहि बाँध बरि डोरी ॥
 समदरसी इच्छा कछु नाहीं ।
 हरष सोक भय नहिं मन माहीं ॥
 अस सज्जन मम उर बस कैसें ।
 लोभी हृदयँ बसइ धनु जैसें ॥
 तुम्ह सारिखे संत प्रिय मोरें ।
 धरउँ देह नहिं आन निहोरें ॥

[दोहा ४८]

सगुन उपासक परहित निरत नीति दृढ़ नेम ।
 ते नर प्रान समान मम जिन्ह कें द्विज पद प्रेम ॥
 सुनु लंकेस सकल गुन तोरें ।
 तातें तुम्ह अतिसय प्रिय मोरें ॥
 राम बचन सुनि बानर जूथा ।
 सकल कहहिं जय कृपा बरूथा ॥
 सुनत बिभीषनु प्रभु कै बानी ।
 नहिं अघात श्रवनामृत जानी ॥
 पद अंबुज गहि बारहिं बारा ।
 हृदयँ समात न प्रेमु अपारा ॥
 सुनहु देव सचराचर स्वामी ।
 प्रनतपाल उर अंतरजामी ॥

उर कछु प्रथम बासना रही ।
 प्रभु पद प्रीति सरित सो बही ॥
 अब कृपाल निज भगति पावनी ।
 देहु सदा सिव मन भावनी ॥
 एवमस्तु कहि प्रभु रनधीरा ।
 मागा तुरत सिंधु कर नीरा ॥
 जदपि सखा तव इच्छा नाहीं ।
 मोर दरसु अमोघ जग माहीं ॥
 अस कहि राम तिलक तेहि सारा ।
 सुमन बृष्टि नभ भई अपारा ॥

[दोहा ४९ (क), (ख)]

रावन क्रोध अनल निज स्वास समीर प्रचंड ।
 जरत बिभीषनु राखेउ दीन्हेउ राजु अखंड ॥
 जो संपति सिव रावनहि दीन्हि दिएँ दस माथ ।
 सोइ संपदा बिभीषनहि सकुचि दीन्हि रघुनाथ ॥
 अस प्रभु छाड़ि भजहिं जे आना ।
 ते नर पसु बिनु पूँछ बिषाना ॥
 निज जन जानि ताहि अपनाव्वा ।
 प्रभु सुभाव कपि कुल मन भावा ॥
 पुनि सर्वग्य सर्व उर बासी ।
 सर्वरूप सब रहित उदासी ॥
 बोले बचन नीति प्रतिपालक ।
 कारन मनुज दनुज कुल घालक ॥

सुनु कपीस लंकापति बीरा ।
 केहि बिधि तरिअ जलधि गंभीरा ॥
 संकुल मकर उरग झष जाती ।
 अति अगाध दुस्तर सब भाँती ॥
 कह लंकेस सुनहु रघुनायक ।
 कोटि सिंधु सोषक तव सायक ॥
 जद्यपि तदपि नीति असि गाई ।
 बिनय करिअ सागर सन जाई ॥

[दोहा ५०]

प्रभु तुम्हार कुलगुर जलधि कहिहि उपाय बिचारि ।
 बिनु प्रयास सागर तरिहि सकल भालु कपि धारि ॥
 सखा कही तुम्ह नीकि उपाई ।
 करिअ दैव जौं होइ सहाई ॥
 मंत्र न यह लछिमन मन भावा ।
 राम बचन सुनि अति दुख पावा ॥
 नाथ दैव कर कवन भरोसा ।
 सोषिअ सिंधु करिअ मन रोसा ॥
 कादर मन कहूँ एक अधारा ।
 दैव दैव आलसी पुकारा ॥
 सुनत बिहसि बोले रघुबीरा ।
 ऐसेहिं करब धरहु मन धीरा ॥
 अस कहि प्रभु अनुजहि समुझाई ।
 सिंधु समीप गए रघुराई ॥

प्रथम प्रनाम कीन्ह सिरु नाई ।
 बैठे पुनि तट दर्भ डसाई ॥
 जबहिं बिभीषन प्रभु पहिं आए ।
 पाछें रावन दूत पठाए ॥

[दोहा ५१]

सकल चरित तिन्ह देखे धरें कपट कपि देह ।
 प्रभु गुन हृदयँ सराहहिं सरनागत पर नेह ॥
 प्रगट बखानहिं राम सुभाऊ ।
 अति सप्रेम गा बिसरि दुराऊ ॥
 रिपु के दूत कपिन्ह तब जाने ।
 सकल बाँधि कपीस पहिं आने ॥
 कह सुग्रीव सुनहु सब बानर ।
 अंग भंग करि पठवहु निसिचर ॥
 सुनि सुग्रीव बचन कपि धाए ।
 बाँधि कटक चहु पास फिराए ॥
 बहु प्रकार मारन कपि लागे ।
 दीन पुकारत तदपि न त्यागे ॥
 जो हमार हर नासा काना ।
 तेहि कोसलाधीस कै आना ॥
 सुनि लछिमन सब निकट बोलाए ।
 दया लागि हँसि तुरत छोड़ाए ॥
 रावन कर दीजहु यह पाती ।
 लछिमन बचन बाचु कुलघाती ॥

[दोहा ५२]

कहेहु मुखागर मूढ़ सन मम संदेसु उदार ।
 सीता देइ मिलहु न त आवा कालु तुम्हार ॥
 तुरत नाइ लछिमन पद माथा ।
 चले दूत बरनत गुन गाथा ॥
 कहत राम जसु लंकाँ आए ।
 रावन चरन सीस तिन्ह नाए ॥
 बिहसि दसानन पूँछी बाता ।
 कहसि न सुक आपनि कुसलाता ॥
 पुनि कहु खबरि बिभीषन केरी ।
 जाहि मृत्यु आई अति नेरी ॥
 करत राज लंका सठ त्यागी ।
 होइहि जव कर कीट अभागी ॥
 पुनि कहु भालु कीस कटकाई ।
 कठिन काल प्रेरित चलि आई ॥
 जिन्ह के जीवन कर रखवारा ।
 भयउ मृदुल चित सिंधु बिचारा ॥
 कहु तपसिन्ह कै बात बहोरी ।
 जिन्ह के हृदयँ त्रास अति मोरी ॥

[दोहा ५३]

की भइ भेंट कि फिरि गए श्रवन सुजसु सुनि मोर ।
 कहसि न रिपु दल तेज बल बहुत चकित चित तोर ॥
 नाथ कृपा करि पूँछेहु जैसें ।
 मानहु कहा क्रोध तजि तैसें ॥

मिला जाइ जब अनुज तुम्हारा ।
 जातहिं राम तिलक तेहि सारा ॥
 रावन दूत हमहि सुनि काना ।
 कपिन्ह बाँधि दीन्हे दुख नाना ॥
 श्रवन नासिका काटैं लागे ।
 राम सपथ दीन्हें हम त्यागे ॥
 पूँछिहु नाथ राम कटकाई ।
 बदन कोटि सत बरनि न जाई ॥
 नाना बरन भालु कपि धारी ।
 बिकटानन बिसाल भयकारी ॥
 जेहिं पुर दहेउ हतेउ सुत तोरा ।
 सकल कपिन्ह महँ तेहि बलु थोरा ॥
 अमित नाम भट कठिन कराला ।
 अमित नाग बल बिपुल बिसाला ॥

[दोहा ५४]

द्विबिद मयंद नील नल अंगद गद बिकटासि ।
 दधिमुख केहरि निसठ सठ जामवंत बलरासि ॥
 ए कपि सब सुग्रीव समाना ।
 इन्ह सम कोटिन्ह गनइ को नाना ॥
 राम कृपाँ अतुलित बल तिन्हहीं ।
 तून समान त्रैलोकहि गनहीं ॥
 अस मैं सुना श्रवन दसकंधर ।
 पदुम अठारह जूथप बंदर ॥

नाथ कटक महँ सो कपि नाहीं ।
 जो न तुम्हहि जीतै रन माहीं ॥
 परम क्रोध मीजहिं सब हाथा ।
 आयसु पै न देहिं रघुनाथा ॥
 सोषहिं सिंधु सहित झष ब्याला ।
 पूरहिं न त भरि कुधर बिसाला ॥
 मर्दि गर्द मिलवहिं दससीसा ।
 ऐसेइ बचन कहहिं सब कीसा ॥
 गर्जहिं तर्जहिं सहज असंका ।
 मानहुँ ग्रसन चहत हहिं लंका ॥

[दोहा ५५]

सहज सूर कपि भालु सब पुनि सिर पर प्रभु राम ।
 रावन काल कोटि कहुँ जीति सकहिं संग्राम ॥
 राम तेज बल बुधि बिपुलाई ।
 सेष सहस सत सकहिं न गाई ॥
 सक सर एक सोषि सत सागर ।
 तव भ्रातहि पूँछेउ नय नागर ॥
 तासु बचन सुनि सागर पाहीं ।
 मागत पंथ कृपा मन माहीं ॥
 सुनत बचन बिहसा दससीसा ।
 जौँ असि मति सहाय कृत कीसा ॥
 सहज भीरु कर बचन दृढ़ाई ।
 सागर सन ठानी मचलाई ॥

मूढ़ मृषा का करसि बड़ाई ।
 रिपु बल बुद्धि थाह मैं पाई ॥
 सचिव सभीत बिभीषन जाकें ।
 बिजय बिभूति कहाँ जग ताकें ॥
 सुनि खल बचन दूत रिस बाढ़ी ।
 समय बिचारि पत्रिका काढ़ी ॥
 रामानुज दीन्ही यह पाती ।
 नाथ बचाइ जुड़ावहु छाती ॥
 बिहसि बाम कर लीन्ही रावन ।
 सचिव बोलि सठ लाग बचावन ॥

[दोहा ५६ (क), (ख)]

बातन्ह मनहि रिझाइ सठ जनि घालसि कुल खीस ।
 राम बिरोध न उबरसि सरन बिष्णु अज ईस ॥
 की तजि मान अनुज इव प्रभु पद पंकज भृंग ।
 होहि कि राम सरानल खल कुल सहित पतंग ॥
 सुनत सभय मन मुख मुसुकाई ।
 कहत दसानन सबहि सुनाई ॥
 भूमि परा कर गहत अकासा ।
 लघु तापस कर बाग बिलासा ॥
 कह सुक नाथ सत्य सब बानी ।
 समुझहु छाड़ि प्रकृति अभिमानी ॥
 सुनहु बचन मम परिहरि क्रोधा ।
 नाथ राम सन तजहु बिरोधा ॥

अति कोमल रघुबीर सुभाऊ ।
 जद्यपि अखिल लोक कर राऊ ॥
 मिलत कृपा तुम्ह पर प्रभु करिही ।
 उर अपराध न एकउ धरिही ॥
 जनकसुता रघुनाथहि दीजे ।
 एतना कहा मोर प्रभु कीजे ॥
 जब तेहिं कहा देन बैदेही ।
 चरन प्रहार कीन्ह सठ तेही ॥
 नाइ चरन सिरु चला सो तहाँ ।
 कृपासिंधु रघुनायक जहाँ ॥
 करि प्रनामु निज कथा सुनाई ।
 राम कृपाँ आपनि गति पाई ॥
 रिषि अगस्ति कीं साप भवानी ।
 राछस भयउ रहा मुनि ग्यानी ॥
 बंदि राम पद बारहिं बारा ।
 मुनि निज आश्रम कहुं पगु धारा ॥

[दोहा ५७]

बिनय न मानत जलधि जड़ गए तीनि दिन बीति ।
 बोले राम सकोप तब भय बिनु होइ न प्रीति ॥
 लछिमन बान सरासन आनू ।
 सोषौं बारिधि बिसिख कृसानू ॥
 सठ सन बिनय कुटिल सन प्रीती ।
 सहज कृपन सन सुंदर नीती ॥

ममता रत सन ग्यान कहानी ।
 अति लोभी सन बिरति बखानी ॥
 क्रोधिहि सम कामिहि हरिकथा ।
 ऊसर बीज बाँँ फल जथा ॥
 अस कहि रघुपति चाप चढ़ावा ।
 यह मत लछिमन के मन भावा ॥
 संधानेउ प्रभु बिसिख कराला ।
 उठी उदधि उर अंतर ज्वाला ॥
 मकर उरग झष गन अकुलाने ।
 जरत जंतु जलनिधि जब जाने ॥
 कनक थार भरि मनि गन नाना ।
 बिप्र रूप आयउ तजि माना ॥

[दोहा ५८]

काटेहिं पड़ कदरी फरइ कोटि जतन कोउ सींच ।
 बिनय न मान खगेस सुनु डाटेहिं पड़ नव नीच ॥
 सभय सिंधु गहि पद प्रभु केरे ।
 छमहु नाथ सब अवगुन मेरे ॥
 गगन समीर अनल जल धरनी ।
 इन्ह कइ नाथ सहज जड़ करनी ॥
 तव प्रेरित मायाँ उपजाए ।
 सृष्टि हेतु सब ग्रंथनि गाए ॥
 प्रभु आयसु जेहि कहँ जस अहई ।
 सो तेहि भाँति रहें सुख लहई ॥

प्रभु भल कीन्ह मोहि सिख दीन्ही ।
 मरजादा पुनि तुम्हरी कीन्ही ॥
 ढोल गवाँर सूद्र पसु नारी ।
 सकल ताड़ना के अधिकारी ॥
 प्रभु प्रताप मैं जाब सुखाई ।
 उतरिहि कटकु न मोरि बड़ाई ॥
 प्रभु अग्या अपेल श्रुति गाई ।
 करौं सो बेगि जो तुम्हहि सोहाई ॥

[दोहा ५९]

सुनत बिनीत बचन अति कह कृपाल मुसुकाइ ।
 जेहि बिधि उतरै कपि कटकु तात सो कहहु उपाइ ॥
 नाथ नील नल कपि द्वौ भाई ।
 लरिकाईं रिषि आसिष पाई ॥
 तिन्ह कें परस किएँ गिरि भारे ।
 तरिहहिं जलधि प्रताप तुम्हारे ॥
 मैं पुनि उर धरि प्रभु प्रभुताई ।
 करिहउँ बल अनुमान सहाई ॥
 एहि बिधि नाथ पयोधि बँधाइअ ।
 जेहिं यह सुजसु लोक तिहुँ गाइअ ॥
 एहिं सर मम उत्तर तट बासी ।
 हतहु नाथ खल नर अघ रासी ॥
 सुनि कृपाल सागर मन पीरा ।
 तुरतहिं हरी राम रनधीरा ॥

देखि राम बल पौरुष भारी ।
हरषि पयोनिधि भयउ सुखारी ॥
सकल चरित कहि प्रभुहि सुनावा ।
चरन बंदि पाथोधि सिधावा ॥

छं० — निज भवन गवनेउ सिंधु
श्रीरघुपतिहि यह मत भायऊ ।
यह चरित कलि मलहर जथामति
दास तुलसी गायऊ ॥
सुख भवन संसय समन दवन
बिषाद रघुपति गुन गना ।
तजि सकल आस भरोस गावहि
सुनहि संतत सठ मना ॥

[दोहा ६०]

सकल सुमंगल दायक रघुनायक गुन गान ।
सादर सुनहिं ते तरहिं भव सिंधु बिना जलजान ॥

इति श्रीमद्रामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने
पञ्चमः सोपानः समाप्तः ।

कलियुगके समस्त पापोंका नाश करनेवाले
श्रीरामचरितमानसका
यह पाँचवाँ सोपान समाप्त हुआ ।

(सुन्दरकाण्ड समाप्त)